

सूरह यूसुफ - 12

سُورَةُ يُوسُفَ

सूरह यूसुफ़ के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 111 आयतें हैं।

- इस में नबी यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) की पूरी कथा का वर्णन किया गया है। इस के द्वारा यह संकेत किया गया है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जिन को मक्का में कुरैश ने जान से मार देने अथवा देश से निकाल देने की योजना बनायी है वह ऐसे ही निष्फल हो जायेंगे जैसे यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के भाईयों की सारी योजना निष्फल हो गई। और एक दिन ऐसा भी आया कि सब भाई उन के आगे हाथ फैलाये खड़े थे। और कुरआन की यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई।
- आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मदीना हिज्रत कर गये। फिर सन् (8) हिज्री में आप ने मक्का को विजय किया तो आप के विरोधि कुरैश आप के आगे उसी प्रकार विवश खड़े थे जैसे यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के भाई उन के आगे हाथ फैलाये कह रहे थे की आप हमे दान कीजिये, अल्लाह दानशीलों को अच्छा बदला देता है। और जैसे यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) ने अपने भाईयों को क्षमा कर दिया वैसे ही आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने भी कहा: जाओ, तुम पर कोई दोष नहीं, अल्लाह तुम्हें क्षमा करे वह सर्वोत्तम दयावान् है। आप उन के अत्याचार का बदला ले सकते थे किन्तु जब आप ने उन से पूछा कि तुम्हारा विचार क्या है कि मैं तुम्हारे साथ क्या करूँगा?? तो उन के यह कहने पर कि आप सज्जन भाई तथा सज्जन भाई के पुत्र है, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: मैं तुम से वही कहता हूँ जो यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) ने अपने भाईयों से कहा था कि आज तुम पर कोई दोष नहीं, जाओ तुम सभी स्वतंत्र हो।

हदीस में है कि सज्जन के सज्जन पुत्र के सज्जन पुत्र, यूसुफ़ पुत्र याकूब पुत्र इसहाक़ पुत्र इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) हैं। (देखिये: सहीह बुखारी, हदीस नं॰: 3382)

एक दूसरी हदीस में आया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया कि यदि मैं उतने दिन बंदी रहता जितने दिन यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) बंदी रहे तो जो व्यक्ति उन को बुलाने आया था मैं उस

के साथ चला जाता।

(देखिये: सहीह बुखारी: हदीस नं: 3372, और सहीह मुस्लिम: हदीस नं: 2370)

याद रहे कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के इस कथन से अभिप्राय यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के सहन की सराहना करना है।

- इस सूरह में यह शिक्षा है कि जो अल्लाह चाहे वही होता है। विरोधियों के चाहने से कुछ नहीं होता, इस में नव युवको के लिये अपनी मर्यादा की रक्षा के लिये भी एक शिक्षा है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

- 1 अलिफ़, लाम, रा। यह खुली पुस्तक की आयतें हैं।

الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ

2. हम ने इस कुर्आन को अर्बी में उतारा है, ताकि तुम समझो।^[1]

اِنَّا اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْلَمُوْنَ

3. (हे नबी!) हम बहुत अच्छी शैली में आप की ओर इस कुर्आन की वही द्वारा आप से इस कथा का वर्णन कर रहे हैं। अन्यथा आप (भी) इस से पूर्व (इस से) असूचित थे।

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَا اَوْحَيْنَا اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْءَانُ ۚ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ

4. जब यूसुफ़ ने अपने पिता से कहा: हे मेरे पिता! मैं ने स्वप्न देखा है कि ग्यारह सितारे, सूर्य तथा चाँद मुझे सज्दा कर रहे हैं।

اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يَا اَبَتِ اِنِّىْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ

5. उस ने कहा: हे मेरे पुत्र! अपना स्वप्न

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءُءَاكَ عَلٰى اِخْوَتِكَ

- 1 क्यों कि कुर्आन के प्रथम सम्बोधित अरब लोग थे फिर उन के द्वारा दूसरे साधारण मनुष्यों को संबोधित किया गया है तो यदि प्रथम संबोधित ही कुर्आन नहीं समझ सकते तो दूसरों को कैसे समझ सकते थे?

अपने भाईयों को न बताना^[1] अन्यथा वह तेरे विरुद्ध षड्यंत्र रचेंगे। वास्तव में शैतान मानव का खुला शत्रु है।

6. और ऐसा ही होगा, तेरा पालनहार तुझे चुन लेगा, तथा तुझे बातों का अर्थ सिखायेगा और तुझ पर और याकूब के घराने पर अपना पुरस्कार पूरा करेगा।^[2] जैसे इस से पहले तेरे पूर्वजों इब्राहीम और इस्हाक़ पर पूरा किया। वास्तव में तेरा पालनहार बड़ा ज्ञानी तथा गुणी है।

7. वास्तव में यूसुफ़ और उस के भाईयों (की कथा) में पछने वालों के^[3] लिये कई निशानियाँ हैं।

8. जब उन (भाईयों) ने कहा: यूसुफ़ और उस का भाई हमारे पिता को हम से अधिक प्रिय हैं। जब कि हम एक गिरोह हैं। वास्तव में हमारे पिता खुली गुमराही में हैं।

9. यूसुफ़ को बध कर दो, या उसे किसी धरती में फेंक दो। इस से तुम्हारे पिता का ध्यान केवल तुम्हारी तरफ़ हो जायेगा। और इस के

فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنْسَانِ
عَدُوٌّ مُّبِينٌ ٥

وَكَذَلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ
تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُمَتِّعُهُ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ آلِ
يَعْقُوبَ كَمَا أَتَمَّ عَلَىٰ أَبِي يُوسُفَ مِنْ قَبْلُ
إِبْرَاهِيمَ وَاسْتَحَقَّ إِنَّ رَبَّكَ عَلَيْهِمْ حَكِيمٌ ٦

لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٍ لِلِّسَالِكِينَ ٧

إِذْ قَالَ الْيُوسُفُ لِأَخِيهِ أَحَبُّ إِلَيَّ إِنَّمَا أَنَا
وَعَنْ غَضَبَةٍ إِنَّ أَبَا نَالِي ضَلُّ مُبِينٌ ٨

إِثْمَلُوا يُوسُفَ أَوْ آطَرُّهُ أَرْضًا يَخُلُ لَكُمْ وَجْهُ
أَبِيكُمْ وَتَكُونُوا مِنْ بَعْدِهِ قَوْمًا صَالِحِينَ ٩

1 यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के दूसरी माँओं से दस भाई थे। और एक सगा भाई था। याकूब अलैहिस्सलाम यह जानते थे कि सौतीले भाई, यूसुफ़ से ईर्ष्या करते हैं। इसलिये उन को सावधान कर दिया कि अपना स्वप्न उन्हें न बतायें।

2 यहाँ पुरस्कार से अभिप्राय नबी बनाना है। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

3 यह प्रश्न यहूदियों ने मक्का वासियों के माध्यम से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किया था, कि वह कौनसे नबी हैं जो शाम में रहते थे, और जब उन का पुत्र मिस्र निकल गया तो उस पर रोते-रोते अन्धे हो गये?? इस पर यह पूरी सूरह उतरी। (तफ़्सीरे कुर्तुबी)

पश्चात् पवित्र बन जाओ।

10. उन में से एक ने कहा: यूसुफ को बध न करो, उसे किसी अंधे कुएं में डाल दो, उसे कोई काफिला निकाल ले जायेगा, यदि कुछ करने वाले हो।
11. उन्होंने ने कहा: हे हमारे पिता! क्या बात है कि यूसुफ के विषय में आप हम पर भरोसा नहीं करते? जब कि हम उस के शुभचिन्तक हैं।
12. उसे कल हमारे साथ (वन में) भेज दें। वह खाये पिये और खेले कूदे। और हम उस के रक्षक (प्रहरी) हैं।
13. उस (पिता) ने कहा। मुझे बड़ी चिन्ता इस बात की है कि तुम उसे ले जाओ। और मैं डरता हूँ कि उसे भेड़िया न खा जाये। और तुम उस से असावधान रह जाओ।
14. सब (भाईयों) ने कहा: यदि उसे भेड़िया खा गया, जब कि हम एक गिरोह हैं, तो वास्तव में हम बड़े विनाश में हैं।
15. फिर जब वे उसे ले गये, और निश्चय किया कि उसे अंधे कुएं में डाल दें, और हम ने उस (यूसुफ) की ओर बह्वी की कि तुम अवश्य इन को उन का कर्म बताओगे, और वह कुछ जानते न होंगे।
16. और वह संध्या को रोते हुये अपने पिता के पास आये।
17. सब ने कहा: हे पिता! हम आपस में

قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَالْقَوْهَ فِي غَيْبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطُهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ إِنْ كُنْتُمْ فَاعِلِينَ ۝

قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَى يُوسُفَ وَإِنَّا لَهُ لَنَصِحُونَ ۝

أَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَزْتَعِمْ وَيَلْعَبُ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ ۝

قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنْ تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غَافِلُونَ ۝

قَالُوا لَئِنْ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا إِذًا لَخَسِرُونَ ۝

فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَاجْتَمَعُوا أَنْ يَجْعَلُوهُ فِي غَيْبَتِ الْجُبِّ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِأَمْرِهِمْ هَذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

وَجَاءَ وَآبَاؤُهُمْ عِشَاءً يَبْكُونَ ۝

قَالُوا يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِشُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ

दौड़ करने लगे। और यूसुफ को अपने सामान के पास छोड़ दिया। और उसे भेड़िया खा गया। और आप तो हमारा विश्वास करने वाले नहीं हैं, यद्यपि हम सच्च ही क्यों न बोल रहे हों।

18. और वह यूसुफ के कुर्ते पर झूठा रक्त^[1] लगा कर लाये। उस ने कहा: बल्कि तुम्हारे मन ने तुम्हारे लिये एक सुन्दर बात बना ली है! तो अब धैर्य धारण करना ही उत्तम है। और उस के संबन्ध में जो बात तुम बना रहे हो अल्लाह ही से सहायता माँगनी है।

19. और एक काफिला आया। उस ने अपने पानी भरने वाले को भेजा, उस ने अपना डोल डाला, तो पुकारा: शुभ हो! यह तो एक बालक है। और उसे व्यापारिक सामग्री समझ कर छुपा लिया। और अल्लाह भली भाँति जानने वाला था जो वे कर रहे थे।

20. और उसे तनिक मूल्य कुछ गिनती के दिरहमों में बेच दिया। और वे उस के बारे में कुछ अधिक की इच्छा नहीं रखते थे।

21. और मिस्र के जिस व्यक्ति ने उसे खरीदा, उस ने अपनी पत्नी से कहा: उस को आदर-मान से रखो। संभव है यह हमें लाभ पहुँचाये, अथवा हम उसे अपना पुत्र बना लें। इस प्रकार उस को हम ने स्थान दिया। और ताकि उसे बातों का अर्थ सिखायें।

عِنْدَ مَتَاعِنَا فَأَكَلَهُ الذِّئْبُ وَمَا أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ
لَنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ ۝

وَجَاءَ وَعَلَى قَمِيصِهِ بِدَمٍ كَذِبٍ قَالَ بَلْ
سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا فَصَبْرٌ جَمِيلٌ وَاللَّهُ
الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ ۝

وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَى دَلْوًا
قَالَ يَبْنَؤُا هَذَا غُلْمٌ وَأَسْرُوكُمْ بَضَاعَةٌ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ۝

وَسَرَّوْهُ بِشَمْنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ وَكَالَوْا
فِيهِ مِنَ الرَّاغِبِينَ ۝

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي
مَثْوَاهُ عَلَيَّ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا
وَكَذَلِكَ مَكَانَ يُوسُفَ فِي الْأَرْضِ وَلَنُعَلِّمَهُ
مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَاللَّهُ غَالِبٌ عَلَى أَمْرِهِ
وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

1 भाष्यकारों ने लिखा है कि वे बकरी के बच्चे का रक्त लगा कर लाये थे।

और अल्लाह अपना आदेश पूरा कर के रहता है। परन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं हैं।

22. और जब वह जवानी को पहुँचा, तो हम ने उसे निर्णय करने की शक्ति तथा ज्ञान प्रदान किया। और इसी प्रकार हम सदाचारियों को प्रतिफल (बदला) देते हैं।

23. और वह जिस स्त्री^[1] के घर में था, उस ने उस के मन को रिझाया, और द्वार बन्द कर लिये, और बोली: "आ जाओ"। उस ने कहा: अल्लाह की शरण! वह मेरा स्वामी है। उस ने मुझे अच्छा स्थान दिया है। वास्तव में अत्याचारी सफल नहीं होते।

24. और उस स्त्री ने उस की इच्छा की। और वह (यूसुफ) भी उस की इच्छा करते, यदि अपने पालनहार का प्रमाण न देख लेते^[2]। इस प्रकार हम ने (उसे सावधान) किया ताकि उस से बुराई तथा निर्लज्जा को दूर कर दें। वास्तव में वह हमारे शुद्ध भक्तों में था।

25. और दोनों द्वार की ओर दोड़े। और उस स्त्री ने उस का कुर्ता पीछे से फाड़ दिया। और दोनों ने उस के

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝

وَرَأَوْنَاهُ أَتَيْنَاهُ هُوَ فِي بَيْتِهَا عَنْ نَفْسِهِ وَغَلَّقَتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَوْلَىٰ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ۝

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنَّ رَأْيَهَا رَأَىٰ رَبُّهُ ۚ كَذَلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ الشُّؤْمَ وَالْفَحْشَاءَ ۚ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ۝

وَأَسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيصَهُ مِنْ دُبُرٍ ۚ وَأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ۚ قَالَتْ مَا جَزَاءُ مَنْ

1 अभिप्रेत मिस्र के राजा (अजीज) की पत्नी है।

2 यूसुफ (अलैहिस्सलाम) कोई फरिश्ता नहीं एक मनुष्य थे। इस लिये बुराई का इरादा कर सकते थे किन्तु उसी समय उन के दिल में यह बात आई कि मैं पाप कर के अल्लाह की पकड़ से बच नहीं सकूँगा। इस प्रकार अल्लाह ने उन्हें बुराई से बचा लिया, जो यूसुफ (अलैहिस्सलाम) की बहुत बड़ी प्रधानता है।

पति को द्वार के पास पाया। उस (स्त्री) ने कहा: जिस ने तेरी पत्नी के साथ बुराई का निश्चय किया, उस का दण्ड इस के सिवा क्या है कि उसे बंदी बना दिया जाये अथवा उसे दुःखदायी यातना (दी जाये)?

26. उस ने कहा: इसी ने मुझे रिझाना चाहा था। और उस स्त्री के घराने से एक साक्षी ने साक्ष्य दिया कि यदि उस का कुर्ता आगे से फाड़ा गया है तो वह सच्ची है, तथा वह झूठा है।

27. और यदि उस का कुर्ता पीछे से फाड़ा गया है तो वह झूठी और वह (यूसुफ) सच्चा है।

28. फिर जब उस (पति) ने देखा कि उस का कुर्ता पीछे से फाड़ा गया है तो कहा: वास्तव में यह तुम स्त्रियों की चालें हैं और तुम्हारी चालें बड़ी घोर होती हैं।

29. हे यूसुफ! तुम इस बात को जाने दो। और (हे स्त्री!) तू अपने पाप की क्षमा माँग, वास्तव में तू पापियों में से है।

30. नगर की कुछ स्त्रियों ने कहा: अजीज (प्रमुख अधिकारी) की पत्नी अपने दास को रिझा रही है। उसे प्रेम ने मुग्ध कर दिया है। हमारे विचार में वह खुली गुमराही में है।

31. फिर जब उस ने उन स्त्रियों की मक्कारी की बात सुनी तो उन्हें बुला भेजा। और उन के (आतिथ्य) के लिये गाव तकिये लगवाये और प्रत्येक स्त्री को एक छुरी

أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ يُسْحَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِي عَنْ نَفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ أَهْلِهَا إِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝

وَإِنْ كَانَ قَمِيصُهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَّابَةٌ وَهُوَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝

فَلَمَّا رَأَىٰ قَمِيصَهُ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِّنْ كَيْدِكُنَّ إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ ۝

يُوسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هَذَا وَاسْتَغْفِرِي لِذَنبِكِ ۖ إِنَّكَ كُنتِ مِنَ الْخَاطِئِينَ ۝

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ نَفْسِهِ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۚ إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكًا وَأَتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ وَقَطَّعْنَ

दे दी^[1] उस ने (यूसुफ़ से) कहा: इन के समक्ष "निकल आ"। फिर जब उन स्त्रियों ने उसे देखा तो चकित (दंग) हो कर अपने हाथ काट बैठी, तथा पुकार उठी: अल्लाह पवित्र है! यह मनुष्य नहीं, यह तो कोई सम्मानित फ़रिश्ता है।

32. उस ने कहा: यही वह है, जिस के बारे में तुम ने मेरी निन्दा की है। वास्तव में मैं ने ही उसे रिझाया था। मगर वह बच निकला। और यदि वह मेरी बात न मानेगा तो अवश्य बंदी बना दिया जायेगा, और अपमानितों में हो जायेगा।

33. यूसुफ़ ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! मुझे कैद उस से अधिक प्रिय है जिस की ओर यह औरतें मुझे बुला रही हैं। और यदि तू ने मुझ से इन के छल को दूर नहीं किया तो मैं उन की ओर झुक पड़ूँगा। और अज्ञानों में से हो जाऊँगा।

34. तो उस के पालनहार ने उस की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। और उस से उन के छल को दूर कर दिया। वास्तव में वह बड़ा सुनने जानने वाला है।

35. फिर उन लोगों^[2] ने उचित समझा, इस के पश्चात् कि निशानियाँ देख^[3] लीं, कि उस (यूसुफ़) को एक अवधि तक के लिये बंदी बना दें।

أَيَّدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَذَا بَشَرًا إِنْ هَذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ۝

قَالَتْ فَذَلِكُنَ الَّذِي لُمْتُنَنِي فِيهِ وَلَقَدْ رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ وَلَئِنْ لَمْ يَفْعَلْ مَا أَمُرُهُ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُونًا مِنَ الصَّغِيرِينَ ۝

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُن مِّنَ الْجَاهِلِينَ ۝

فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

ثُمَّ بَدَأَ هُوَ مِنْ بَعْدِ مَا رَأَوُا الرِّيَاسَاتِ لِيَسْجُنَنَّهُ فَحُبِّ ۝

1 ताकि अतिथि स्त्रियाँ उस से फलों को काट कर खायें जो उन के लिये रखे गये थे।

2 अर्थात् अजीज़ (मिस्र देश का शासक) और उस के साथियों ने।

3 अर्थात् यूसुफ़ के निर्दोष होने की निशानियाँ।

36. और उस के साथ कैद में दो युवकों ने प्रवेश किया। उन में से एक ने कहा: मैं ने स्वप्न देखा है कि शराब निचोड़ रहा हूँ। और दूसरे ने कहा: मैं ने स्वप्न देखा है कि अपने सिर के उपर रोटी उठाये हुये हूँ, जिस में से पक्षी खा रहे हैं। हमें इस का अर्थ (स्वप्नफल) बता दो। हम देख रहे हैं कि तुम सदाचारियों में से हो।

37. यूसुफ ने कहा: तुम्हारे पास तुम्हारा वह भोजन नहीं आयेगा जो तुम दोनों को दिया जाता है परन्तु मैं तुम दोनों को उस का अर्थ (फल) बता दूँगा। यह उन बातों में से है जो मेरे पालनहार ने मुझे सिखायी हैं। मैं ने उस जाति का धर्म तज दिया है जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखती। और वही परलोक को नकारने वाले हैं।

38. और अपने पूर्वजों इब्राहीम तथा इस्हाक और याकूब के धर्म का अनुसरण किया है। हमारे लिये वैध नहीं कि किसी चीज़ को अल्लाह का साझी बनायें। यह अल्लाह की दया है हम पर और लोगों पर। परन्तु अधिकतर लोग कृतज्ञ नहीं होते।^[1]

39. हे मेरे कैद के दोनों साथियो! क्या विभिन्न पूज्य उत्तम है, या एक प्रभुत्वशाली अल्लाह??

40. तुम अल्लाह के सिवा जिस की इबादत (वन्दना) करते हो वह केवल नाम है,

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيْنِ قَالَ أَحَدُهُمَا إِنِّي أَرَانِي أَعْصِرُ خَمْرًا وَقَالَ الْآخَرُ إِنِّي أَرَانِي أُحْمَلُ فَوْقَ رَأْسِي خُبْرًا تَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ نَبِّئْنَا بِتَأْوِيلِهِ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ۝

قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقُنِيهِ إِلَّا نَبَّأَكُمَا بِتَأْوِيلِهِ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمَا ذَلِكُمَا مَعَ عَمَلِكُمَا رَئِيَ إِنِّي تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ۝

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِي إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ مَا كَانَ لَنَا أَنْ نُشْرِكَ بِاللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ذَلِكَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۝

لِيَصَاحِبِيَ السِّجْنِ ۚ أَرَبَابٌ مُتَفَرِّقُونَ خَيْرٌ أَمِ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝

مَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا أَسْمَاءُ سَمَّيْتُمُوهَا

1 अर्थात् तौहीद और नबियों के धर्म को नहीं मानते जो अल्लाह का उपकार है।

जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिये हैं। अल्लाह ने उन का कोई प्रमाण नहीं उतारा है। शासन तो केवल अल्लाह का है। उस ने आदेश दिया है कि उस के सिवा किसी की इबादत (वन्दना) न करो। यही सीधा धर्म है। परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते हैं।

أَنْتُمْ وَإِبَادُكُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهِمْ مِنْ سُلْطَانٍ
إِنَّ الْحُكْمَ أَلَيْلَهُ أَمَرَ الْأَتَّعِيدُ وَالْأَرَايَاهُ
ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠﴾

41. हे मेरे कैद के दोनों साथियो! रहा तुम में से एक तो वह अपने स्वामी को शराब पिलायेगा। तथा दूसरा, तो उस को फाँसी दी जायेगी, और पक्षी उस के सिर में से खायेंगे। उस का निर्णय कर दिया गया है जिस के संबन्ध में तुम दोनों प्रश्न कर रहे थे।

يَصَاحِبِي السَّجْنِ أَمَّا أَحَدُكُمْ فَاتَّبَعِي رَّبَّهُ
خَمْرًا وَأَمَّا الْآخَرُ فَيُصَلِّبُ فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ
مِنْ رَأْسِهِ قُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِيْنَ ﴿١١﴾

42. और उस से कहा जिसे समझा कि वह उन दोनों में से मुक्त होने वाला है: मेरी चर्चा अपने स्वामी के पास कर देना। तो शैतान ने उसे अपने स्वामी के पास उस की चर्चा करने को भुला दिया। अतः वह (यूसुफ़) कई वर्ष कैद में रह गया।

وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِنْهُمَا اذْكُرْنِي
عِنْدَ رَبِّكَ فَأَنَسَهُ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ فَلَبِثَ
فِي السَّجْنِ بَضْعَ سِنِينَ ﴿١٢﴾

43. और (एक दिन) राजा ने कहा: मैं सात मोटी गायों को सपने में देखता हूँ जिन को सात दुबली गायें खा रही हैं। और सात हरी बालियाँ हैं और दूसरी सात सूखी हैं। हे प्रमुखो! मुझे मेरे स्वप्न के संबंध में बताओ, यदि तुम स्वप्न फल बता सकते हो?

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَى سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ
يَأْكُلْنَ سَبْعَ عَجَافٍ وَسَبْعَ سُتَبِلَاتٍ خُضِرٍ
وَأُخْرٍ يُسَبِّتُ يَأْكُلْنَ الْمَلَائِكَةُ أَفْتُونِي فِي رُؤْيَايَ
إِنْ كُنْتُمْ لِلرُّؤْيَا تَعْبُرُونَ ﴿١٣﴾

44. सब ने कहा: यह तो उलझे स्वप्न की बातें हैं। और हम ऐसे स्वप्नों का अर्थ (फल) नहीं जानते।

قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَامِ
بِغَالِبِينَ ﴿١٤﴾

45. और उस ने कहा जो दोनों में से मुक्त हुआ था, और उसे एक अवधि के पश्चात् बात याद आयी: मैं तुम्हें इस का फल (अर्थ) बता दूँगा, तुम मुझे भेज^[1] दो।

46. हे यूसुफ! हे सत्यवादी! हमें सात मोटी गायों के बारे में बताओ, जिन को सात दुबली गायें खा रही हैं। और सात हरी बालियाँ हैं, और सात सूखी, ताकि लोगों के पास वापिस जाऊँ, और ताकि वह जान^[2] लें।

47. यूसुफ ने कहा: तुम सात वर्ष निरन्तर खेती करते रहोगे। तो जो कुछ काटो उसे उस की बाली में छोड़ दो, परन्तु थोड़ा जिसे खाओगे। (उसे बालों से निकाल लो।)

48. फिर इस के पश्चात् सात कड़े (आकाल के) वर्ष होंगे। जो उसे खा जायेंगे जो तुम ने उन के लिये पहले से रखा है, परन्तु उस में से थोड़ा जिसे तुम सुरक्षित रखोगे।

49. फिर इस के पश्चात् एक ऐसा वर्ष आयेगा जिस में लोगों पर जल बरसाया जायेगा, तथा उसी में (रस) निचोड़ेंगे।

50. और राजा ने कहा: उसे मेरे पास लाओ। और जब यूसुफ के पास भेजा हुआ आया, तो आप ने उस से कहा कि अपने स्वामी के पास वापिस

وَقَالَ الَّذِي نَجَّاهُ مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُمْ بِتَأْوِيلِهِ فَأَرْسِلُونِ ۖ

يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ سَوِيَّاتٍ يَأْكُلُهَا سَبْعُ عَجَافٍ وَسَبْعِ سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَبْسُتُ لَعَلَّ أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ۖ

قَالَ زَرْعُونَ سَبْعَ سِنِينَ ذَا بَأْسٍ فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرُونَهَا فِي سُنبُلِهِ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا نَأْكُلُونَ ۖ

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا تَحْصُونَ ۖ

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْرِضُونَ ۖ

وَقَالَ الْمَلِكُ اتَّبِعْنِي فِيهِ فَأَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ فَسَلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الَّتِي قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ۖ

1 अर्थात् कैद खाने में यूसुफ अलैहिस्सलाम के पास।

2 अर्थात् आप की प्रतिष्ठा और ज्ञान को।

जाओ^[1], और उस से पूछो कि उन स्त्रियों की क्या दशा है जिन्होंने अपने हाथ काट लिये थे? वास्तव में मेरा पालनहार उन स्त्रियों के छल से भलि-भांति अवगत है।

51. (राजा) ने उन स्त्रियों से पूछा: तुम्हारा क्या अनुभव है, उस समय का जब तुम ने यूसुफ़ के मन को रिझाया? सब ने कहा: अल्लाह पवित्र है! उस पर हम ने कोई बुराई का प्रभाव नहीं जाना। तब अज़ीज़ की पत्नी बोल उठी: अब सत्य उजागर हो गया, वास्तव में मैं ने ही उस के मन को रिझाया था, और निःसंदेह वह सत्वादियों में है।^[2]

52. यह (यूसुफ़) ने इस लिये किया, ताकि उसे (अज़ीज़ को) विश्वास हो जाये कि मैं ने गुप्त रूप से उस के साथ विश्वास घात नहीं किया। और वस्तुतः अल्लाह विश्वास घातियों से प्रेम नहीं करता।

53. और मैं अपने मन को निर्दोष नहीं कहता, मन तो बुराई पर उभारता है। परन्तु जिस पर मेरा पालनहार दया कर दे। मेरा पालनहार अति

قَالَ مَا خَطْبُكُمْ إِذْ رَأَوْتُنَّ يُوسُفَ عَنْ نَفْسِهِ
قُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوءٍ قَالَتِ
أُمُّرَأَتُ الْعَزِيزِ إِنَّهُنَّ حَصَصَ الْحَقُّ أَنَا رَأَوْتُهُ عَنْ
نَفْسِهِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الصّٰدِقِیْنَ

ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنْیْ لَمْ أَخْنُفْ بِالْغَیْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ
لَا یَهْدِیْ كَیْدَ الْخٰیثِیْنَ

وَمَا اَبْرِئُ نَفْسِیْ اِنَّ النَّفْسَ لَمَّارَةٌ
بِالسُّوْءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّیْ اِنَّ رَبِّیْ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ

1 यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) को बंदी बनाये जाने से अधिक उस का कारण जानने की चिन्ता थी। वह चाहते थे कि कैद से निकलने से पहले यह सिद्ध होना चाहिये कि मैं निर्दोष था।

2 यह कुआन पाक का बड़ा उपकार है कि उस ने रसूलों तथा नबियों पर लगाये गये बहुत से आरोपों का निवारण (खण्डन) कर दिया है। जिसे अहले किताब (यहूदी तथा ईसाई) ने यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) के विषय में बहुत सी निर्मूल बातें घड़ ली थीं जिन को कुआन ने आकर साफ़ कर दिया।

क्षमाशील तथा दयावान् है।

54. राजा ने कहा: उसे मेरे पास लाओ, उसे मैं अपने लिये विशेष कर लूँ। और जब उस (यूसुफ़) से बात की, तो कहा: वस्तुतः तू आज हमारे पास आदरणीय भरोसा करने योग्य है।
55. उस (यूसुफ़) ने कहा: मुझे देश का कोषाधिकारी बना दीजिये। वास्तव में मैं रखवाला बड़ा ज्ञानी हूँ।
56. और इस प्रकार हम ने यूसुफ़ को उस धरती (देश) में अधिकार दिया, वह उस में जहाँ चाहे रहे। हम अपनी दया जिसे चाहें प्रदान करते हैं, और सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करते।
57. और निश्चय परलोक का प्रतिफल उन लोगों के लिये उत्तम है, जो ईमान लाये, और अल्लाह से डरते रहे।
58. और यूसुफ़ के भाई आये^[1], तथा उस के पास उपस्थित हुये, और उस ने उन्हें पहचान लिया, तथा वह उस से अपरिचित रह गये।
59. और जब उन का सामान तय्यार कर दिया तो कहा: अपने सौतीले भाई^[2] को लाना। क्या तुम नहीं देखते कि मैं पूरा माप देता हूँ, तथा उत्तम अतिथि सत्कार करने वाला हूँ?

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِي فَلَمَّا كَلِمَةُ قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ أَمِينٌ ﴿٥٤﴾

قَالَ اجْعَلْنِي عَلَى خَزَائِنِ الْأَرْضِ إِنِّي حَفِيظٌ عَلِيمٌ ﴿٥٥﴾

وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ يَدْعُوا مِنْهَا حَيْثُ يَشَاءُ نُصِيبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَشَاءُ وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾

وَلَا جُرْ الْأُخْرَىٰ خَيْرٌ لِلَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٧﴾

وَجَاءَ إِخْوَةُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ﴿٥٨﴾

وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِأَخِي لَكُم مِّنْ أَيْمُنِكُمْ أَلا تَرَوْنَ إِنِّي آتِي فِي الْكَيْلِ وَأَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ﴿٥٩﴾

1 अर्थात् अकाल के युग में अब लेने के लिये फिलस्तीन से मिस्र आये थे।

2 जो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का सगा भाई बिन्यामीन था।

60. फिर यदि तुम उसे मेरे पास नहीं लाये तो मेरे यहाँ तुम्हारे लिये कोई माप नहीं, और न तुम मेरे समीप होगे।

فَإِنْ لَّمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِي
وَلَا تَقْرَبُونِ ۝

61. वह बोले: हम उस के पिता को इस की प्रेरणा देंगे, और हम अवश्य ऐसा करने वाले हैं।

قَالُوا سَتَرْنَا عَنْهُ آيَاهُ وَإِنَّا لَفَاعِلُونَ ۝

62. और यूसुफ ने अपने सेवकों को आदेश दिया: उन का मूलधन^[1] उन की बोरियों में रख दो, संभवतः वह उसे पहचान लें जब अपने परिजनों में जायें और संभवतः वापिस आयें।

وَقَالَ لِفِتْيَانِهِ اجْعَلُوا بِضَاعَتَهُمْ فِي رِحَالِهِمْ
لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ۝

63. फिर जब अपने पिता के पास लौट कर गये तो कहा: हमारे पिता! हम से भविष्य में (अन्न) रोक दिया गया है। अतः हमारे साथ हमारे भाई को भेजें कि हम सब अन्न (गन्ना) लायें, और हम उस के रक्षक हैं।

فَلَمَّا رَجَعُوا إِلَىٰ أَبِيهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مُنِعَ مِنَّا
الْكَيْلُ فَأَرْسِلْ مَعَنَا آخَانَ نَكْتَلُ وَإِنَّهُ
لَحَفِظُونُ ۝

64. उस (पिता) ने कहा: क्या मैं उस के लिये तुम पर ऐसे ही विश्वास कर लूँ जैसे इस के पहले उस के भाई (यूसुफ) के बारे में विश्वास कर चुका हूँ? तो अल्लाह ही उत्तम रक्षक और वही सर्वाधिक दयावान् है।

قَالَ هَلْ آمَنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا آمَنْتُكُمْ عَلَىٰ أَخِيهِ
مِنْ قَبْلُ فَأَلَّهِ خَيْرٌ حَفِظًا وَهُوَ أَرْحَمُ
الرَّحِيمِينَ ۝

65. और जब उन्होंने ने अपना सामान खोला, तो पाया कि उन का मूलधन उन्हें फेर दिया गया है, उन्होंने ने कहा: हे हमारे पिता! हमें और क्या चाहिये? यह हमारा धन हमें फेर दिया गया है? हम अपने घराने के

وَلَمَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ
إِلَيْهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مَا نَبْغِي هَذِهِ بِضَاعَتُنَا
رُدَّتْ إِلَيْنَا وَنَمِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَا وَنَزِدَادُ
كَيْلَ يَعِيرُ ذَلِكَ كَيْلٌ يَسِيرٌ ۝

1 अर्थात् जिस धन से अन्न खरीदा है।

लिये गल्ले (अन्न) लायेंगे, और एक ऊँट का बोझ अधिक लायेंगे^[1], यह माप (अन्न) बहुत थोड़ा है।

66. उस (पिता) ने कहा: मैं कदापि उसे तुम्हारे साथ नहीं भेजूँगा, यहाँ तक कि अल्लाह के नाम पर मुझे दृढ़ वचन दो कि उसे मेरे पास अवश्य लाओगे, परन्तु यह कि तुम को घेर लिया^[2] जाये। और जब उन्होंने ने अपना दृढ़ वचन दिया तो कहा, अल्लाह ही तुम्हारी बात (वचन) का निरीक्षक है।

67. और (जब वह जाने लगे) तो उस (पिता) ने कहा: हे मेरे पुत्रों! तुम एक द्वार से (मिस्र में) प्रवेश न करना, बल्कि विभिन्न द्वारों से प्रवेश करना। और मैं तुम्हें किसी चीज़ से नहीं बचा सकता जो अल्लाह की ओर से हो। और आदेश तो अल्लाह का चलता है, मैं ने उसी पर भरोसा किया, तथा उसी पर भरोसा करने वालों को भरोसा करना चाहिये।

68. और जब उन्होंने (मिस्र में) प्रवेश किया जैसे उन के पिता ने आदेश दिया था तो ऐसा नहीं हुआ कि वह उन्हें अल्लाह से कुछ बचा सके। परन्तु यह याकूब के दिल में एक विचार उत्पन्न हुआ, जिसे उस ने पूरा कर लिया^[3] और वास्तव में वह उस का

قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتَّى تُؤْتُونِ مَوْثِقًا مِّنَ اللَّهِ لَتَأْتُنِي بِهِ إِلَّا أَن يُحَاطَبَكُمْ فَلَمَّا أَنُؤُوا مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَى مَا نَقُولُ وَكِيلٌ

وَقَالَ يَبْنَئِي لَأَتَدْخُلُوْا مِنْ بَابٍ وَاحِدٍ وَادْخُلُوا مِنْ أَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ وَمَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ

وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ مَا كَانَ يُغْنِي عَنْهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةٌ فِي نَفْسِ يَعْقُوبَ قَضَاهَا وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنَاهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ

1 अर्थात् अपने भाई बिन्यामीन का जो उन की दूसरी माँ से था।

2 अर्थात् विवश कर दिये जाओ।

3 अर्थात् एक अपना उपाय था।

ज्ञानी था जो ज्ञान हम ने उसे दिया था। परन्तु अधिकांश लोग इस (की वास्तविकता) का ज्ञान नहीं रखते।

69. और जब वे यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उस ने अपने भाई को अपनी शरण में ले लिया। (और उस से) कहा: मैं तेरा भाई (यूसुफ़) हूँ। अतः उस से उदासीन न हो जो (दुर्व्यवहार) वह करते आ रहे हैं।

70. फिर जब उस (यूसुफ़) ने उन का सामान तय्यार करा दिया तो प्याला अपने भाई के सामान में रख दिया। फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा: हे काफ़िले वालो! तुम लोग तो चोर हो।

71. उन्होंने फिर कर कहा: तुम क्या खो रहे हो?

72. उन (कर्मचारियों) ने कहा: हमें राजा का प्याला नहीं मिल रहा है। और जो उसे ला दे उस के लिये एक ऊँट का बोझ है और मैं उस का प्रतिभू^[1] हूँ।

73. उन्होंने ने कहा: तुम जानते हो कि हम इस देश में उपद्रव करने नहीं आये हैं, और न हम चोर ही हैं।

74. उन लोगों ने कहा। तो यदि तुम झूठे निकले तो उस का दण्ड क्या होगा?^[2]

75. उन्होंने ने कहा: उस का दण्ड वही होगा जिस के सामान में पाया जाये,

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَىٰ إِلَيْهِ أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٩﴾

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَتَتْهَا الْعِيرُ إِنَّكُمْ لَسِرِقُونَ ﴿٧٠﴾

قَالُوا وَأَقْبَلُوا عَلَيْهِمْ مَاذَا تَفْقِدُونَ ﴿٧١﴾

قَالُوا تَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَن جَاءَ بِهِ حِمْلُ بَعِيرٍ وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ ﴿٧٢﴾

قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَآ جُنْدَ النَّفْسِ فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا سِرْقِينَ ﴿٧٣﴾

قَالُوا فَمَا جَزَاؤُهُ إِنْ كُنْتُمْ كَاذِبِينَ ﴿٧٤﴾

قَالُوا جَزَاؤُهُ مَن وُجِدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاؤُهُ

1 अर्थात् एक ऊँट के बोझ बराबर पुरस्कार देने का भार मुझ पर है।

2 अर्थात् चोर का।

वही उस का दण्ड होगा। इसी प्रकार हम अत्याचारियों को दण्ड देते हैं।^[1]

76. फिर उस ने खोज का आरंभ उस (यूसुफ) के भाई की बोरी से पहले उन की बोरियों से किया। फिर उस को उस (बिन्यामीन) की बोरी से निकाल लिया। इस प्रकार हम ने यूसुफ के लिये उपाय^[2] किया। वह राजा के नियमानुसार अपने भाई को नहीं रख सकता था, परन्तु यह कि अल्लाह चाहता। हम जिस का चाहें मान सम्मान ऊँचा कर देते हैं। और वह प्रत्येक ज्ञानी से ऊपर एक बड़ा ज्ञानी^[3] है।

77. उन भाईयों ने कहा: यदि उस ने चोरी की है तो उस का एक भाई भी इस से पहले चोरी कर चुका है। तो यूसुफ ने यह बात अपने दिल में छुपा ली। और उसे उन के लिये प्रकट नहीं किया। (यूसुफ ने) कहा: सब से बुरा स्थान तुम्हारा है। और अल्लाह उसे अधिक जानता है जो तुम कह रहे हो।

78. उन्होंने ने कहा: हे अजीज़!^[4] उस

كَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ۝

فَبَدَأَ بِأَوْعِيَّتِهِمْ قَبْلَ وِعَاءِ أَخِيهِ ثُمَّ
اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِعَاءِ أَخِيهِ كَذَلِكَ كِدْنَا
لْيُوسُفَ مَا كَانَ لِيَأْخُذَ أَخَاهُ فِي دِينِ
الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ تَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَن تَشَاءُ
وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ۝

قَالُوا إِنْ يَسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَهُ مِنْ قَبْلُ
فَأَسْرَهَا يُّوسُفُ فِي نَفْسِهِ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ
قَالَ أَنْتُمْ شَرُّ مَحْكَمَاتٍ ۝ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَصِفُونَ ۝

قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا كَبِيرًا

1 अर्थात् याकूब अलैहिस्सलाम के धर्म विधान में चोर को दास बना लेने का नियम था। (तफ्सीरे कुर्तुबी)

2 अपने भाई बिन्यामीन को रोक लेने की विधि बना दी।

3 अर्थात् अल्लाह से बड़ा कोई ज्ञानी नहीं हो सकता। इसलिये किसी को अपने ज्ञान पर गर्व नहीं होना चाहिये।

4 यहाँ पर «अजीज़» का प्रयोग यूसुफ (अलैहिस्सलाम) के लिये किया गया है। क्योंकि उन्हीं के पास सरकार के अधिकतर अधिकार थे।

का पिता बहुत बूढ़ा है। अतः हम में से किसी एक को उस के स्थान पर ले लो। वास्तव में हम आप को परोपकारी देख रहे हैं।

79. उस (यूसुफ़) ने कहा: अल्लाह की शरण कि हम (किसी अन्य को) पकड़ लें, परन्तु उसी को (पकड़ेंगे) जिस के पास अपना सामान पाया है। (यदि ऐसा न करें) तो हम वास्तव में अत्याचारी होंगे।

80. फिर जब उस से निराश हो गये तो एकान्त में हो कर परामर्श करने लगे। उन के बड़े ने कहा: क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे पिता ने तुम से अल्लाह को साक्षी बना कर दृढ़ वचन लिया था? और इस से पहले जो अपराध तुम ने यूसुफ़ के बारे में किया है? तो मैं इस धरती (मिस्र) से नहीं जाऊँगा जब तक मुझे मेरे पिता अनुमति न दे दें। अथवा अल्लाह मेरे लिये निर्णय न कर दे। और वही सब से अच्छा निर्णय करने वाला है।

81. तुम अपने पिता की ओर लौट जाओ, और कहो कि हे हमारे पिता! आप के पुत्र ने चोरी की, और हम ने वही साक्ष्य दिया जिसे हम ने^[1] जाना, और हम ग़ैब के रखवाले नहीं^[2] थे।

82. आप उस बस्ती वालों से पूछ लें,

فَخَذَّ أَحَدُنَا مَكَانَةَ إِثَارِكَ مِنَ الْمُبِينِ ۝

قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَنْ نَأْخُذَ إِلَّا مَن وَجَدْنَا مَتَاعِنَا عَنْدَهُ إِذَا دَأَّ الظَّالِمُونَ ۝

فَلَمَّا اسْتَيْسُوا مِنْهُ خَلَصُوا نَجِيًّا، قَالَ كَيْفَ لَهُمْ أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ أَبَاكُمْ قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُمْ فِي يُوسُفَ فَلَنْ أَبْرَحَ الْأَرْضَ حَتَّى يَأْذَنَ لِي إِلَى أَوْخِيكُمْ اللَّهُ لِي وَهُوَ خَيْرُ الْحَكِيمِينَ ۝

ارْجِعُوا إِلَى آبَائِكُمْ فَقُولُوا يَا أَبَانَا إِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلَّمَنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حَفِظِينَ ۝

وَسَأَلَ الْقَرْيَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا وَالْعِيرَ الَّتِي

1 अर्थात् राजा का प्याला उस के सामान से निकलते देखा।

2 अर्थात् आप को उस के वापिस लाने का वचन देते समय यह नहीं जानते थे कि वह चोरी करेगा। (तफ्सीरे कुर्तुबी)

जिस में हम थे, और उस काफिले से जिस में हम आये हैं, और वास्तव में हम सच्चे हैं।

أَقْبَلْنَا فِيهَا وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٥٠﴾

83. उस (पिता) ने कहा: ऐसा नहीं, बल्कि तुम्हारे दिलों ने एक बात बना ली है। तो इस लिये अब सहन करना ही उत्तम है, संभव है कि अल्लाह उन सब को मेरे पास वापिस ला दे, वास्तव में वही जानने वाला तत्त्वदर्शी है।

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا فَصَبِرْ جَوِيلٌ عَنِ اللَّهِ أَنْ يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَبِيلًا إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿٥١﴾

84. और उन से मुँह फेर लिया, और कहा: हाय यूसुफ! और उस की दोनों आखें शोक के कारण (रोते-रोते) सफेद हो गयीं, और उस का दिल शोक से भर गया।

وَسَوَّلَىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا سَفَىٰ عَلَىٰ يُونُسَ وَأَبْيَضَّتْ عَيْنُهُ مِنَ الْحُزَنِ فَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٥٢﴾

85. उन (पुत्रों) ने कहा: अल्लाह की शपथ! आप बराबर यूसुफ को याद करते रहेंगे यहाँ तक कि (शोक से) घुल जायें, या अपना विनाश कर लें।

قَالُوا وَاللَّهِ تَفْتُونَا تَذَكَّرُ يُونُسَ حَتَّىٰ تَكُونَ حَرَضًا أَوْ تَكُونَ مِنَ الْهَالِكِينَ ﴿٥٣﴾

86. उस ने कहा: मैं अपनी आपदा तथा शोक की शिकायत अल्लाह के सिवा किसी से नहीं करता। और अल्लाह की ओर से वह बात जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوا بَثِّي وَحُزْنِي إِلَى اللَّهِ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٥٤﴾

87. हे मेरे पुत्रो! जाओ, और यूसुफ और उस के भाई का पता लगाओ। और अल्लाह की दया से निराश न हो। वास्तव में अल्लाह की दया से वही निराश होते हैं जो काफिर हैं।

يَبْنَیٰ اذْهَبُوا فَتَحَسَّسُوا مِنْ یُّوسُفَ وَآخِیْهِ وَلَا تَأْخُذُوا مِنْ رُّوحِ اللّٰهِ اِنَّهٗ لَا یُؤْتِیْ مَنْ رُّوحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْکَافِرُوْنَ ﴿٥٥﴾

88. फिर जब उस (यूसुफ) के पास (मिस्र में) गये तो कहा: हे अजीज़! हम

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَیْهِ قَالُوا يَا اَيُّهَا الْعَزِیْزُ مَسَّنَا

पर और हमारे घराने पर आपदा (अकाल) आ पड़ी है। और हम थोड़ा धन (मूल्य) लाये हैं, अतः हमें (अन्न का) पूरा माप दें, और हम पर दान करें। वास्तव में अल्लाह दानशीलों को प्रतिफल प्रदान करता है।

89. उस (यूसुफ़) ने कहा: क्या तुम जानते हो कि तुम ने यूसुफ़ तथा उस के भाई के साथ क्या कुछ किया है, जब तुम अज्ञान थे?

90. उन्होंने ने कहा: क्या आप यूसुफ़ हैं? यूसुफ़ ने कहा: मैं यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हम पर उपकार किया है। वास्तव में जो (अल्लाह से) डरता तथा सहन करता है तो अल्लाह सदाचारियों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं करता।

91. उन्होंने कहा: अल्लाह की शपथ! उस ने आप को हम पर श्रेष्ठता प्रदान की है। वास्तव में हम दोषी थे।

92. यूसुफ़ ने कहा: आज तुम पर कोई दोष नहीं, अल्लाह तुम्हें क्षमा कर दे। वही सर्वाधिक दयावान् है।

93. मेरा यह कुर्ता ले जाओ, और मेरे पिता के मुख पर डाल दो, वह देखने लगेंगे। और अपने पूरे घराने को (मिस्र) ले आओ।

94. और जब काफ़िले ने प्रस्थान किया, तो उन के पिता ने कहा: मुझे यूसुफ़ की सुगन्ध आ रही है, यदि तुम मुझे

وَأَهْلَنَا الضَّرَّ وَجِئْنَا بِضَاعَةٍ مُّزْجَاةٍ فَأَوْفٍ لَّنَا الْكَفِيلُ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ ۝

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَا فَعَلْتُمْ بِيُوسُفَ وَأَخِيهِ إِذْ أَنْتُمْ جَاهِلُونَ ۝

قَالُوا إِنَّكَ لَأَنْتَ يُوسُفُ قَالَ أَنَا يُوسُفُ وَهَذَا أَخِي قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا إِنَّهُ مَنْ يَشَقِّ وَيَصِيرُ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۝

قَالُوا وَاللَّهِ لَقَدْ أَشْرَكْنَا بِاللَّهِ عَلَيْنَا وَإِنْ كُنَّا لَخَاطِئِينَ ۝

قَالَ لَا تَتُوبَ عَلَيْنَا الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝

إِذْ هَبُوا بَيِّمِي هَذَا أَقْلُوهُ عَلَى وَجْهِ أَيْ يَأْتِ بِصُورَةٍ وَأَتُونِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ ۝

وَلَمَّا فَصَلَ الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ لَوْلَا أَنْ تُفِئُونِي ۝

बहका हुआ बूढ़ा न समझो।

95. उन लोगों^[1] ने कहा: अल्लाह की शपथ! आप तो अपनी पुरानी सनक में पड़े हुये हैं।
96. फिर जब शुभ-सूचक आ गया, तो उस ने वह (कुर्ता) उन के मुख पर डाल दिया। और वह तुरंत देखने लगे। याकूब ने कहा: क्यों मैं ने तुम से नहीं कहा था कि वास्तव में अल्लाह की ओर से जो कुछ मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते।
97. सब (भाईयों) ने कहा: हे हमारे पिता! हमारे लिये हमारे पापों की क्षमा मांगिये, वास्तव में हम ही दोषी थे।
98. याकूब ने कहा: मैं तुम्हारे लिये अपने पालनहार से क्षमा की प्रार्थना करूँगा, वास्तव में वह अति क्षमी दयावान् है।
99. फिर जब वह यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उस ने अपने माता-पिता को अपनी शरण में ले लिया। और कहा: नगर (मिस्र) में प्रवेश कर जाओ, यदि अल्लाह ने चाहा तो शान्ति से रहोगे।
100. तथा अपने माता-पिता को उठा कर सिंहासन पर बिठा लिया। और सब उस के समक्ष सज्दे में गिर गये।^[2] और यूसुफ़ ने कहा:

قَالُوا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِي ضَلٰلِكَ اَقَدٍ ۝

فَلَمَّا اَنَّ جَاءَ الْبَشِيْرَ اَلْقَاهُ عَلٰى وُجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّيْ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

قَالُوا يَا اَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا اِنَّا كُنَّا خٰطِيْنَ ۝

قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْر الرَّحِيْمُ ۝

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلٰى يُوْسُفَ اَوٰى اِلَيْهِ اَبُوْيهٖ ۖ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرًا اِنْ شَاءَ اللّٰهُ اٰمِيْنَ ۝

وَرَفَعَ اَبُوْيهٖ عَلٰى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهُ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يَا بٰتِ هٰذَا اَنَا وُئِيْلٌ لِّيَّامِيْ مِنْ قَبْلُ ۚ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ۚ وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْ ۚ اِذَا اَخْرَجْنِيْ

1 याकूब अलैहिस्सलाम के परिजनो ने जो फिलस्तीन में उन के पास थे।

2 जब यूसुफ़ की यह प्रतिष्ठा देखी तो सब भाई तथा माता-पिता उन के सम्मान के लिये सज्दे में गिर गये। जो अब इस्लाम में निरस्त कर दिया गया है। यही

हे मेरे पिता! यही मेरे स्वप्न का अर्थ है जो मैं ने पहले देखा था। मेरे पालनहार ने उसे सचच कर दिया है, तथा मेरे साथ उपकार किया, जब उस ने मुझे कारावास से निकाला, और आप लोगों को गाँवों से मेरे पास (नगर में) ले आया, इस के पश्चात् कि शैतान ने मेरे तथा मेरे भाईयों के बीच विरोध डाल दिया। वास्तव में मेरा पालनहार जिस के लिये चाहे उस के लिये उत्तम उपाय करने वाला है। निश्चय वही अति ज्ञानी तत्त्वज्ञ है।

101. हे मेरे पालनहार! तू ने मुझे राज्य प्रदान किया, तथा मुझे स्वप्नों का अर्थ सिखाया। हे आकाशों तथा धरती के उत्पत्तिकार! तू लोक तथा परलोक में मेरा रक्षक है। तू मेरा अन्त इस्लाम पर कर, और मुझे सदाचारियों में मिला दे।

102. (हे नबी!) यह (कथा) परोक्ष के समाचारों में से है, जिस की वही हम आप की ओर कर रहे हैं। और आप उन (भाईयों) के पास नहीं थे, जब वह आपस की सहमति से षड्यंत्र रचते रहे।

103. और अधिकांश लोग आप कितनी ही लालसा करें, ईमान लाने वाले नहीं हैं।

مِنَ السَّجِّينِ وَجَاءَ بِكُمْ مِنَ الْبَدَنِ مِنَ الْبَعْدِ
أَنْ تَرَوْهُ شَيْطَانُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي إِنَّ
رَبِّي لَطِيفٌ لِّمَا يَشَاءُ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ⑩

رَبِّ قَدْ آتَيْنَتْنِي مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِي مِمَّا
تَأْوِيلُ الْأَحَادِيثِ فَأَطْرَقَتِ الْمَوْتُ وَالْأَرْضَ
أَنْتَ وَلِيٌّ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا
وَالْحَقِّنِي يَا الصَّالِحِينَ ⑪

ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ وَمَا كُنْتَ
لَدَيْهِمْ إِذْ أَجْمَعُوا أَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُونَ ⑫

وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ ⑬

उस स्वप्न का फल था जिस में यूसुफ अलैहिस्सलाम ने ग्यारह सितारों, सूर्य तथा चाँद को अपने लिये सज्दा करते देखा था।

104. और आप इस (धर्मप्रचार) पर उन से कोई पारिश्रमिक (बदला) नहीं माँगते। यह (कुर्आन) तो विश्ववासियों के लिये (केवल) एक शिक्षा है।

وَمَا تَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ۝

105. तथा आकाशों और धरती में बहुत सी निशानियाँ (लक्षण^[1]) हैं जिन पर से लोग गुज़रते रहते हैं, और उन पर ध्यान नहीं देते।^[2]

وَكَايْنِ مِّنْ آيَةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَٱلْأَرْضِ يَمُرُّونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ ۝

106. और उन में से अधिकतर अल्लाह को मानते हैं परन्तु (साथ ही) मुशरिक (मिश्रणवादी)^[3] भी हैं।

وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُم بِٱللَّهِ إِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُونَ ۝

107. तो क्या वह निर्भय हो गये हैं कि उन पर अल्लाह की यातना छा जाये, अथवा उन पर प्रलय अकस्मात आ जाये, और वह अचेत रह जायें?

أَفَأَمْسُوا۟ أَن تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ ٱللَّهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ ٱلسَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

108. (हे नबी!) आप कह दें यही मेरी डगर है, मैं अल्लाह की ओर बुला रहा हूँ। मैं पूरे विश्वास और सत्य पर हूँ, और जिस ने मेरा अनुसरण किया। तथा अल्लाह पवित्र है, और मैं मुशरिकों (मिश्रणवादियों) में से नहीं हूँ।

قُلْ هَذِهِ سَبِيلِي ۖ أَدْعُو إِلَى ٱللَّهِ عَلَىٰ بَصِيرَةٍ ۖ أَنَا۟ وَمَنِ اتَّبَعَنِي ۖ وَسُبْحَ ٱللَّهُ وَمَا أَنَا مِنَ ٱلْمُشْرِكِينَ ۝

1 अर्थात् सहस्त्रों वर्ष की यह कथा इस विवरण के साथ वही द्वारा ही संभव है, जो आप के अल्लाह के नबी होने तथा कुर्आन के अल्लाह की वाणी होने का स्पष्ट प्रमाण है।

2 अर्थात् विश्व की प्रत्येक चीज़ अल्लाह के अस्तित्व और उस की शक्ति और सद्गुणों की परिचायक है, मात्र सोच विचार की आवश्यकता है।

3 अर्थात् अल्लाह के अस्तित्व और गुणों का विश्वास रखते हैं, फिर भी पूजा-अर्चना अन्य की करते हैं।

109. और हम ने आप से पहले मानव^[1] पुरुषों ही को नबी बनाकर भेजा जिन की ओर प्रकाशना भेजते रहे, नगर वासियों में से, क्या वे धरती में चले फिरे नहीं, ताकि देखते कि उन का परिणाम क्या हुआ जो इन से पहले थे? और निश्चय आखिरत (परलोक) का घर (स्वर्ग) उन के लिये उत्तम है, जो अल्लाह से डरे, तो क्या तुम समझते नहीं हो।

110. (इस से पहले भी रसूलों के साथ यही हुआ)। यहाँ तक कि जब रसूल निराश हो गये, और लोगों को विश्वास हो गया कि उन से झूठ बोला गया है, तो उन के लिये हमारी सहायता आ गई, फिर हम जिसे चाहते हैं बचा लेते हैं, और हमारी यातना अपराधियों से फेरी नहीं जाती।

111. इन कथाओं में बुद्धिमानों के लिये बड़ी शिक्षा है, यह (कुर्आन) ऐसी बातों का संग्रह नहीं है, जिसे स्वयं

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُوْحِي إِلَيْهِمْ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا أَفَلَا تَعْقِلُونَ ٩

حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْسَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِّبُوا جَاءَهُمْ نَصْرٌ مِنْ رَبِّنَا فَأَمْنٌ مِنْ ثَمَازٍ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ١٠

لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۚ مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَكِنْ تَصْدِيقُ

1 कुर्आन की अनेक आयतों में आप को यह बात मिलेगी कि रसूलों का अस्वीकार उन की जातियों ने दो ही कारण से किया:

एक तो यह कि उन के एकेश्वरवाद की शिक्षा उन के बाप-दादा की परम्परा के विरुद्ध थी, इसलिये सत्य को जानते हुये भी उन्होंने उस का विरोध किया। दूसरा यह कि उन के दिल में यह बात नहीं उतरी कि कोई मानव पुरुष अल्लाह का रसूल कैसे हो सकता है? रसूल तो किसी फरिश्ते को होना चाहिये। फिर यदि रसूलों को किसी जाति ने स्वीकार भी किया तो कुछ युगों के पश्चात् उसे ईश्वर अथवा ईश्वर का पुत्र बनाकर एकेश्वरवाद को आघात पहुँचाया और शिर्क (मिश्रणवाद) का द्वार खोल दिया। इसीलिये कुर्आन ने इन दोनों कुविचारों का बार बार खण्डन किया है।

बना लिया जाता हो, परन्तु इस से पहले की पुस्तकों की सिद्धि और प्रत्येक वस्तु का विवरण (ब्योरा) है। तथा मार्ग दर्शन और दया है उन लोगों के लिये जो ईमान (विश्वास) रखते हों।

الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ
وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

